पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित 01.09.2022 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस पर संगीत संध्या

एक शाम ऋषि दयानंद के नाम
मंगलवार 25 अक्टूबर 2022,
शाम 4 से रात्रि 8 बजे तक
स्थानः आर्य समाज पंजाबी
बाग विस्तार, दिल्ली
साथियों सहित सपरिवार पहुंचे
– अनिल आर्य

वर्ष-39 अंक-07 भाद्रपद-2079 दयानन्दाब्द 199 01 सितम्बर से 15 सितम्बर 2022 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशितः 01.09.2022, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

करनाल में युवा संस्कार समारोह सोल्लास सम्पन्न

परिषद ने 10 दिन में 50 कार्यक्रमों द्वारा 6000 से अधिक लोगों को जोड़ा

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद हरियाणा के तत्वावधान में विशाल युवा संस्कार समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें 250 से अधिक बच्चों ने यज्ञोपवीत धारण किया। प्रान्तीय अध्यक्ष स्वतंत्र कुकरेजा, केन्द्रीय सभा के प्रधान आनन्द सिंह आर्य, अजय आर्य, रोशन आर्य, अर्जुन देव आर्य के प्रयास से कार्यक्रम सफल हुआ।

आर्य समाज उत्तम नगर दिल्ली में श्रावणी पर्व सम्पन्न

सोमवार 28 अगस्त 2022, आर्य समाज उतम नगर दिल्ली में श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में यज्ञ, भजन व प्रवचन का सुन्दर कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि हिन्दू समाज की एकता व संगठन से ही राष्ट्रीय अखण्डता सुरक्षित है। आर्य समाज का देश के स्वतंत्रता संग्राम में सर्वाधिक योगदान रहा, आज फिर से उन्हें राष्ट्रीय अखण्डता की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध होना पड़ेगा। राष्ट्र ईट पत्थरों से बने हुए भवनों का नाम नहीं है अपितु यह विचारों से बनता है। दुनिया में विचार शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है क्योंकि विचारों के परिवर्तन से ही धर्मान्तरण और धर्मान्तरण से राष्ट्रान्तरण होता है जिससे व्यक्ति की सोच व निष्ठा ही बदल जाती है। यज्ञ और योग समाज को जोड़ने का उतम उपाय है इससे किसी का विरोध नहीं है। आज वैदिक विचारों की मेहता बढ़ गई है क्योंकि भारतीय संस्कृति सर्वे भवन्तु सुखिनः सभी के कल्याण व समभाव का संदेश देती है। आर्य नेता वेद प्रकाश आर्य, डॉ विनोद सम्पादक राष्ट्र किकर ने भी अपने विचार रखे। आचार्य हरेंद्र शास्त्री ने यज्ञ करवाया व आरती आर्य के मधुर भजन हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजकुमार भाटिया ने की व कुशल संचालन मंत्री अमर सिंह आर्य ने किया। ओमबीर सिंह आर्य, गौरव झा, अंकुर आर्य,राधा अग्रवाल, सुलोचना आर्य, रेणु त्यागी, अरुण शास्त्री, श्री कृष्ण योगाचार्य आदि उपस्थित थे।

'राजनीति नहीं अपितु राजधर्म की आवश्यकता' पर गोष्ठी सम्पन्न

बुधवार 31 अगस्त 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'राजनीति नहीं अपितु राजधर्म की आवश्यकता' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया । यह कॅरोना काल मे 437 वा वेबिनार था। वैदिक विद्वान आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने राजधर्म का प्रयोग करके राजनीति को सकारात्मक दिशा दी है । उन्होंने कहा कि राजनीति एक निरपेक्ष शब्द है जबकि राजधर्म सापेक्ष शब्द है जो जन कल्याण की भावना को समेटे है ।धर्म राज्य के हितों व अधिकारों की रक्षा का कार्य करता है जो सत्य, दया व लोकोपकार से प्रेरित होता है ।महर्षि दयानंद के राजधर्म से अभिप्राय राजनीति के उन महान सिद्धान्तों से जिन्हें वर्तमान में विधि का शासन कह सकते हैं । स्वामी जी ने राज्य संचालन के लिए तीन सभाओं की राजार्या सभा, विद्यार्य सभा व धर्मार्य सभा की परिकल्पना 150 वर्ष पूर्व सत्यार्थ प्रकाश में लिख दी थी, इसी तरह उन्होंने 18 वर्ष के बात भी 150 वर्ष पूर्व लिख दी थी व आर्य समाज के निर्वाचन का आधार भी प्रजातांत्रिक रूप से 18 वर्ष वालो को प्रदान किया । धर्म का पालन कर्म कांड न होकर उन्होंने कर्त्तव्य पालन से जोड़ा ।कर्तव्य पालन की दृढ़ इच्छाशक्ति व संकल्प ही प्रजातंत्र का आधार है महर्षि दयानंद ब्रह्मर्षि ही नहीं अपितु राजऋषि भी थे उनके 150 पूर्व लिखे विचार आज भी प्रसिनगिक है ।

'युग दृष्टा योगीराज श्री कृष्ण' पर गोष्ठी सम्पन्न

अन्यायी का वध ही उचित है –आचार्य चंद्रशेखर शर्मा

तपस्वी, योगी, कूटनीतिज्ञ थे श्री कृष्ण –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शुक्रवार 19 अगस्त 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'युग दृष्टा योगीराज श्री कृष्ण' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल में 432 वाँ वेबिनार था। वैदिक विद्वान आचार्य चंद्र शेखर शर्मा ने कहा कि जीवन जीने की कला का नाम ही श्री कृष्ण है , उन्होंने कहा कि अपने जन्मकाल से ही ऐसी महान विभूतियाँ ज्ञानयोग,कर्मयोग,भक्तियोग,निष्कामयोग और ध्यानयोग के द्वारा सांसारिकजनों को सुपथ पर चलने के लिए सदा संप्रेरित करती रही है।भारतीय जनमानस में अपनी भारतीय संस्कृति के संवाहक,संरक्षक एवं संप्रेरक ऋषियों,मुनियों,संन्यासियों और महापुरुषों के प्रति सर्वदा अन्तर्मन में अपार श्रद्धा रही है।ऐसे ही कोटि–कोटि जनों के श्रद्धा एवं विश्वास के आराध्य योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं। ष्मथुरा एवं वृंदावन में बालचरितष्शूरसेन द्वारा स्थापित मथुरा में अपने पूज्य पिता उग्रसेन से राज्य छीनकर अन्यायी एवं अत्याचारी कंस ने नारद जी द्वारा अपनी मृत्यु का कारण जानकर अपनी चचेरी बहन देवकी और वसुदेव को कारगार में बंद करके प्रसूत संतानों को यमलोक पहुँचाया।श्रीकृष्ण के जन्म लेते ही कंस के महापापों और उसके पालित पापियों के एक–एक पाप का घड़ा फूटने लगा। माँ यशोदा और नंदबाबा के संरक्षण, गोपजनों के साहचर्य,गोमाता की सेवा,यमुना की शीतल सलिल धारा,वृंदावन की रमणीयता का साहचर्य,बंधुत्वभाव,पूर्ण अपनत्व और माधुर्यरस का पावन संचार सबके लिए सदा स्पृहणीय, श्लाघनीय एवं संवेदनीय रहा है, वृंदावन के मधुर रूप से मथुरा का मल्लयुद्ध,पापियों के पाप के विध्वंस के साथ महापापी कंस के महाविनास में श्रीकृष्ण के शौर्य,प्रताप,पराक्रम,वीरता और महातेज का दिव्यतम स्वरूप दिखाई देता है।अन्यायी का महावध ही श्रेष्ठ है।चाहे वह अपने परिवार का हो।युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उद्दण्ड एवं वाचाल शिशुपाल का वध श्रीकृष्ण की महान शौर्यगाथा के प्रबल प्रमाण हैं।आज भारतीय जनमानस को अपने आराध्य श्रीकृष्ण के शौर्यपूर्ण चरित्र की उपासना करनी चाहिए।ष्वीरभोग्या वसुन्धराष यह कथन सार्थक है। श्रीकृष्ण ने कंस के कारागार से माता–पिता को मुक्त करके 'ष पितृयज्ञष' पूर्ण किया। श्रीकृष्ण का महान चरित्र राजसत्ता के लालच से बहुत दूर है।कंस और जरासंध तथा दुर्योधन के वध के बाद कभी स्वयं सत्तासीन न होकर दूसरों को सत्ता देकर सदुपयोग करना सिखाया।श्रीकृष्ण का यह उदात्त चरित्र सदा वंदनीय है। उज्जैन में शस्त्र–शास्त्र शिक्षाष महर्षि सांदीपनी के गुरुकुल में समस्त शस्त्र संचालन में कुशलता और समस्त वेदादि शास्त्रों में पूर्ण प्रवीणता प्राप्त की।

पांडवों से प्रेम की प्रगाढ़ताष्द्रौपदी के स्वयंवर में अर्जुन के धनुर्विद्या कौशल और भीम के विकराल पराक्रम को देखकर श्रीकृष्ण का पांडवों और बुआ कुंती से भेंट प्रेम की प्रगाढ़ता है।ष्द्रौपदी के अश्रुविमोचक श्रीकृष्णष युधिष्ठिर के शकुनि मामा के द्वारा रचित द्यूतक्रीडा के महाजाल में फंसकर सर्वस्व दाव पर लगाने के बाद 13 वर्ष के वनवास के प्रस्थान अश्रुपूर्ण द्रौपदी को जीवन जीने की आशा,कष्टों से न घबराना, आशापूर्ण जीवन जीना और महाविपत्ति में महाधैर्य रखना श्रीकृष्ण का गुणग्राही यह चरित्र सदा उपासनीय है। 'शांतिदूत श्रीकृष्ण का हस्तिनापुर की महासभा में महाभाषण'। विराट नगरी से शांतिदूत श्रीकृष्ण ने हस्तिनापुर जाकर कौरवों की महासभा में महागर्जना करते हुए श्रीकृष्ण ने राजा धृतराष्ट्र,रानी गांधारी, भीष्मपितामह,द्रोणाचार्य, कृपाचार्य,दुर्योधन और कर्ण आदि को एक–एक करके उनके अधर्म, अन्याय और अत्याचार की पापगाथा ऐसी सुनाई कि युद्ध से पहले सबकी मानसिक पराजय हो गई।यही श्रीकृष्ण की कुटिल युद्धनीति थी कि सबको अपनी कमजोरी और पांडवों की धर्मनीति,न्यायनीति और विजय नीति का बोध करा दिया। आज भारतीयों को श्रीकृष्ण के इस गौरवपूर्ण चरित्र को महाभारत में बार– बार पढ़कर अपनाना चाहिए। ष कुरुक्षेत्र के महारण में गीता का महाज्ञान' महारण के वीभत्स वातावरण में खड़े होकर महाज्ञान की महापाठशाला में गीता का उपदेश करना,मोहग्रस्त और पलायनवादी अर्जुन को क्षत्रियधर्म का पाठ पढ़ाना,अर्जुन उपदेश स्वीकार करना और संजय द्वारा राजा धृतराष्ट्र को युद्ध में पांडवों के विजय की घोषणा करना। यही गीता का कर्मयोग है।जो मुर्दे में प्राण संचार कर देता है।गिरे हुए को दौड़ा देता है। ष समस्या का समाधान गीता। श्रीमद् भगवद् गीता के 18 अध्याय और 700 श्लोक, यह मानव मात्र के लिए समस्त समस्याओं का महासमाधान है। जीवन के सर्वांगीण स्वरूप का सुंदरतम चित्रण है।जिन भारतीय मनीषी चिंतकों ने इस पावन ज्ञान में अवगाहन किया है।उनका जीवन धन्य हो गया है। 'द्वारका में श्रीकृष्ण की यशपताका' द्वारका में भगवान श्रीकृष्ण की गगनचुंबी यशपताका फहराती हुई तथा बहुत दूर से दिखाई देती हुई हमारे मन और हृदय को रोमांचित कर देती है। 'प्रभास (सोमनाथ) में महाप्रयाणष्संसार में भगवान योगेश्वर श्रीकृष्ण का महा– आगमन और महा–प्रस्थान अनुपम और अद्वितीय है। आना और जाना दोनों परम श्रेयस्कर हैं। संसार में बसना और बसाना परम कल्याणकारी है। जीवन में जगना और सोना दिव्यतम है। प्रत्येक क्षण, प्रत्येक पल, प्रत्येक घड़ी, प्रत्येक प्रहर, प्रत्येक दिन, प्रत्येक रात, प्रत्येक सप्ताह, प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक मास, प्रत्येक ऋतु, प्रत्येक अयन और प्रत्येक वर्ष को सानंद से जीने की महान कला सीखना ही श्रीकृष्ण की जीवनगाथा है। मृत्यु भी अमृत बन जाये,यही श्रीकृष्ण की गीता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि श्री कृष्ण ने जीवन से मृत्यु पर्यन्त कोई बुरा कार्य नहीं किया वह योगी,तपस्वी व कूटनीतिज्ञ थे। मुख्य अतिथि सरदार हरभजन सिंह देयोल व अध्यक्ष राजेश मेहंदीरत्ता रहे।राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। कई लोगों ने श्री कृष्ण जी पर भजन व गीत प्रस्तुत किये ।

'राष्ट्रीय स्वतंत्रता–अर्थ और दर्शन' पर गोष्ठी सम्पन्न

स्वदेशी सोच, स्वदेशी चिन्ह, स्वदेशी भाषा व वेशभूषा स्वतंत्रता का परिचायक है –अतुल सहगल

बुधवार 17 अगस्त 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्त्वावधान में 'राष्ट्रीय स्वतंत्रता–अर्थ और दर्शन' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में 431वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान अतुल सहगल ने स्वतंत्रता के मौलिक अर्थ की व्याख्या की और जीव से लेकर जन समुदाय और राष्ट्र की स्वतंत्रता को परिभाषित करते हुए राष्ट्रीय स्वतंत्रता की चर्चा और व्याख्या की। आर्यसमाज के नियम संख्या 10 और यजुर्वेद की राष्ट्रीय प्रार्थना को प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय स्वतंत्रता के मुख्य पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने उन सब बिंदुओं पर प्रकाश डाला जो कि एक स्वतंत्र, स्वावलम्बी और सुदृढ़ राष्ट्र की पहचान कराते हैं। राष्ट्र के लक्षणों को श्रोताओं के सम्मुख रखते हुए उनकी विस्तृत व्याख्या की। आत्मनिर्भरता, स्वावलम्बन और स्वदेशी की अवधारणा प्रस्तुत की। स्वदेशी सोच, स्वदेशी चिन्ह, स्वदेशी भाषा और स्वदेशी वेशभूषा को पूर्ण राष्ट्र स्वतंत्रता के बिंदुओं के रुप में प्रकट किया। भारत में स्वतंत्रता हेतु क्रन्तिकारी आंदोलन और इनके पीछे काम कर रही स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा शक्ति व आर्य समाज के योगदान की बात कही। राष्ट्रीय स्वतंत्रता को सम्पूर्ण करने के लिए राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता के महत्त्व को उजागर किया। हमारे समाज की कुछ बुराईयों की चर्चा करते हुए जातिवाद, साम्प्रदायवाद और परिवारवाद से मुक्ति पाने पर ज़ोर दिया। राष्ट्रवाद को प्रबल और सबल बनाने हेतु स्वदेशी प्रोद्योगिकी और स्वदेशी उत्पादन की महत्ता प्रकट की। सामाजिक एकरसता विकसित करने की बात कही। इस राष्ट्रीय स्वतंत्रता की अवधारणा को ग्रहण करके हम सब राष्ट्र के घटक अपने अपने राष्ट्रीय कर्तव्य को समझकर उसके अनुरूप पुरुषार्थ में जुट जाएँ और राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर पहुंचाएँ। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने संचालन करते हुए कहा कि सच्ची स्वतंत्रता सोचने की शक्ति, भाषा, पहनावा, रहन सहन से पता चलती है। अध्यक्ष विदुषी विद्योत्मा झा ने राष्ट्रीय सोच व स्वतंत्रता के महत्व पर प्रकाश डाला।राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द प्रखर राष्ट्र वादी थे। गायिका प्रवीना ठक्कर, रजनी चुग ,रविंदर गुप्ता,जनक अरोरा, संतोष सांची,कुसुम भंडारी, सुदर्शन चौधरी,कमलेश चांदना, शोभा बत्रा,सुमित्रा गुप्ता,प्रतिभा कटारिया,कमला हंस,ईश्वर देवी आदि के भजन हुए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 437वां वेबिनार सम्पन्न

मेरा राष्ट्र–मेरा अभिमान विषय पर आर्य वेबिनार सम्पन्न

राष्ट्र स्वाभिमान सर्वोपरि है –डॉ. कल्पना रस्तोगी

प.राजगुरु का बलिदान युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

बुधवार 24 अगस्त 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'मेरा राष्ट्र–मेरा अभिमान' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी व अमर शहीद राजगुरु की 114 वी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उल्लेखनीय है कि अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव को 23 मार्च 1931 को लाहौर में इकठे फांसी दी गई थी। यह कॅरोना काल में 433 वा वेबिनार था। मुख्य वक्ता डॉ. कल्पना रस्तोगी ने कहा की किसी भी व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसके अपने राष्ट्र से ही होती है, क्योंकि हमारा अस्तित्व इसी से जुड़ा है , यदि हमारा राष्ट्र सुरक्षित है,तो उसमे हम भी सुरक्षित हैं और हमारा राष्ट्र फले फूलेगा तो हमें भी फलने फूलने, आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे। जिस प्रकार हमारी रगों में खून दौड़ता है ,उसी प्रकार राष्ट्र भक्ति का विचार भी हमारी रगों में दौड़ना चाहिए। परन्तु प्राय देखा जाता है कि जब भी कोई राष्ट्रीय पर्व आता है तो खून में राष्ट्र भक्ति का उबाल आ जाता है। परन्तु धीरे धीरे यह शांत भी होने लगता है और हम पूर्व की भांति अपने अपने कार्यो में ,व्यवसायों में व्यस्त हो जाते हैं, लेकिन मेरे विचार से कि इन राष्ट्रीय पर्वों का स्वरूप कुछ रचनात्मक होना चाहिए जैसे इन पर्वो को कुछ इस तरह मनाया जाए कि कुछ विचारशील लोग ,अपने मित्रो ,सहकर्मियों, आदि के साथ बैठें और राष्ट्र की समस्याओ पर ध्यान दें ,उनसे मुक्त होने के लिए क्या किया जा सकता है ,हम अपना क्या योगदान दे सकते हैं आदि विषयो पर विचार गोष्ठियां करे,लेख लिखें लोगो को जागरूक करें, जिनमे समाज के हर वर्ग की हिस्सेदारी हो, साथ बैठकर ,कुछ समाधान ढूंढे जाए तो, मेरे विचार से इन पर्वो को मनाने की सार्थकता अधिक होगी क्योंकि राष्ट्र तो हम सबका है। परन्तु कुछ प्रतिशत लोग आज भी ऐसे अवश्य हैं जिनके मन में देश की परिस्थितियों को सकारात्मक रूप से बदलने के विचार निरंतर हिलोरें मारते रहते हैं। ये वे लोग है, जिनके माता पिता ने उनमें राष्ट्र प्रेम की लौ जगाई है। मैं बहुत ही गर्व से कहना चाहती हूँ कि जो सच्चे आर्य परिवार हैं ,उनके रगो में आज भी देशभक्ति भरी पड़ी है। क्योंकि हमारे समाज के प्रवर्तक ही महर्षि दयानन्द एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे, जिन्होंने स्वराज्य पाने की अलख जगाई। आज भी सबसे अधिक राष्ट्र चिंतन यदि किसी समाज में होता है तो वह आर्यसमाजों में ही होता है। भारत देश की अमूल्य धरोहरें वेद, पुराण, महाभारत, रामायण, गीता जैसे शाश्वत ग्रंथों पर, ऋषि संस्कृति पर ,भारत की अभूतपूर्व और गौरवमयी गरिमा पर बात यहीं होती है। राष्ट्र की बात हो तो हमारे महापुरुष मर्यादापुरुषोत्तम राम का नाम लिए बिना नहीं रहा जा सकता जिन्होंने कहा –अपि स्वर्णमयी लंका न में रोचते लक्ष्मण। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। अर्थात हे लक्ष्मण ये लंका भले ही स्वर्ण निर्मित है ,परन्तु इस सोने की लंका में भी मेरी कोई रुचि नहीं है द्य मेरे लिए तो मेरी मातृभमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। ये थे राष्ट्रीय चेतना के स्वर और श्री कृष्ण ने जीवन भर राष्ट्र धर्म निभाया, राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य किया। आज 'राष्ट्र प्रथम' की अपेक्षा 'स्वार्थ प्रथम' की भावना पनप रही है जिस पर रोक लगनी चाहिए। अपने राष्ट्र को आगे बढ़ने के लिए हमें विदेशी वस्तुओ का मोह और प्रयोग छोड़ना ही होगा। हमें भ्रमण के लिए अन्य स्थानों के साथ साथ ऐसे ऐतिहासिक स्थलों पर अवश्य जाना चाहिए जहाँ से हमारा गौरवपूर्ण इतिहास जुड़ा हो। एक–दूसरे से जितना भी सम्भव हो अपनी मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा में ही संभाषण करें। यदि हम ही अपनी भाषा अपनी संस्कृति का सम्मान नहीं करेंगे तो दू सरो से क्या अपेक्षा कर सकते हैं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि यह राष्ट्र की स्वतंत्रता शहीदों के बलिदान से ही मिली है प.राजगुरू जी का आज 114 वा जन्मदिन है हमारे लिए उनके बलिदान को याद कर प्रेरणा लेने का दिन है विशेष कर युवाओं को उनसे प्रेरणा लेकर राष्ट्र रक्षा का संकल्प लेना चाहिए। मुख्य अतिथि गायत्री मीना(मंत्री आर्य समाज नोएडा) व सुरेश हसीजा ने भी अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि राष्ट्र रहेगा तो हम सब रहेंगे। कई लोगों ने देश भक्ति के गीत प्रस्तुत किये।

आर्य समाज ज़ोर बाग़ दिल्ली में श्री कृष्ण जन्माष्टमी सम्पन्न

रविवार 21 अगस्त 2022, आर्य समाज जोर बाग लोधी रोड नई दिल्ली में योगिराज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सोल्लास मनाई गई। डॉ. सत्यपाल सिंह (सांसद), डॉ. योगानंद शास्त्री, रविदेव गुप्ता, डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने ओजस्वी विचार रखे। संचालन आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र ने किया। चित्र में–परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य को सम्मानित करते प्रधान हरीश धवन, मंत्री महेन्द्र जेतली, कोषाध्यक्ष संजय गांधी व प्रकाश वीर शास्त्री। द्वितीय चित्र में डी ए वी स्कूल यूसफ़ सराय दिल्ली से प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त होने पर स्वागत करते अनिल आर्य,अतुल अरोड़ा व शैलेश आर्य।

ग्राम बुराड़ी व फतहपुर बेरी दिल्ली में युवा संस्कार समारोह सम्पन्न

दिल्ली के बुराड़ी में डॉ. राधाकान्त शास्त्री के ब्रह्मत्व में व देवेन्द्र आर्य के कुशल संचालन में कार्यक्रम संपन्न हुआ व द्वितीय चित्र में ग्राम फतहपुर बेरी नई दिल्ली में बिजेंद्र चौहान के संयोजन में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

'कुपोषण की समस्या और समाधान' पर गोष्ठी सम्पन्न

बच्चों के लिए पौष्टिक आहार व व विटामिन की व्यवस्था होनी चाहिए –प्रो. करुणा चांदना

सोमवार 29 अगस्त 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'कुपोषण की समस्या और समाधान' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया । यह कॅरोना काल में 436 वा वेबिनार था। मुख्य वक्ता प्रो.करूणा चांदना ने कहा कि कुपोषण का अर्थ केवल भोजन की कमी से नहीं है अपितु गलत जीवन शैली,गलत असमय खान पान व अनियमित दिनचर्या भी उसके कारण है । प्रतिवर्ष लगभग 300000 बच्चे प्रोटीन कैलोरी कुपोषण से मरते हैं। इसके अतिरिक्त विटामिन ए की कमी से होने वाला रतौंधी लोहे की कमी से होने वाला एनीमिया भी भारत जैसे विकासशील देश में बहुत प्रचलित है। कुपोषण के मुख्य कारण गरीबी ,अधिक जनसंख्या ,खाद्य पदार्थों का सीमित होना, गर्भावस्था में मां को उचित पोषण ना मिलना, जंक फूड, बोतल बन्द फूड, फ्रोजन फूड आदि खानपान तथा पेस्टिसाइड्स फर्टिलाइजर्स युक्त मिलावटी खाना आदि कारण है। समाधान –––पोषण विज्ञान पहली से पांचवी क्लास तक पाठ्यक्रम का हिस्सा होना चाहिए। गर्भवती महिला को संतुलित आहार देना चाहिए। घरों में किचन गार्डन बनाए जाएं ताकि ताजे फल और सब्जियां खा सकें। प्राइमरी स्कूलों में मिड डे मील की सुंदर व्यवस्था होनी चाहिये, ऐसा करने से बहुत हद तक हम कुपोषण से लड़ सकते हैं। साथ साथ समय पर उठना व समय पर सोना साथ ही भोजन लेना भी आवश्यक है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि जिस देश का बचपन भूखा हो उस देश की जवानी क्या होगी अतः सरकार व सामाजिक संस्थाओं को बच्चों को उचित आहार,विटामिन आदि उपलब्ध करवाने के लिए उत्तदायित्व लेना चाहिए। मुख्य अतिथि आर्य नेता उमेश भूटानी(सोनीपत) व अध्यक्ष शशिकांता कस्तूरिया ने भी विचार रखे । राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। गायक रविन्द्र गुप्ता, प्रवीना ठक्कर, रचना वर्मा,कमलेश मोंगा(केन्या नैरोबी),सुदर्शन चौधरी, संतोष धर, कमला हंस,कौशल्या अरोड़ा, कुसुम भंडारी, ईश्वर देवी आदि के मधुर भजन हुए।

'संध्या रहस्य' पर गोष्ठी सम्पन्न

ध्यान उपासना के लिए 'संध्यालेय' बनाये जाए– डॉ. राम चन्द्र (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)

शुक्रवार 26 अगस्त 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'संध्या रहस्य' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कॅरोना काल में 434 वा वेबिनार था। मुख्य वक्ता डॉ.रामचन्द्र (विभागाध्यक्ष संस्कृत, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) ने कहा कि देश भर में ध्यान उपासना के लिए 'संध्यालेय' खुलने चाहिए क्योंकि यदि व्यक्ति ईश्वर विश्वासी होगा तो शांतचित, परिवार के वा राष्ट्र के प्रति भी जिम्मेदार होगा। उन्होंने कहा कि संध्या वन्दन ऋषियों की विश्व को सर्वोच्च देन है। गायत्री मन्त्र के जाप और प्राणायाम की दीर्घ काल तक की सतत साधना से सभी शारीरिक और मानसिक पाप पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं। ब्रह्ममुहूर्त में जागरण करके पूर्वाभिमुख बैठकर पवित्र मन से शुद्ध आसन पर नियमित सन्ध्या उपासना का अभ्यास नर को नारायण बना देता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की पंच महायज्ञ विधि के आधार पर सन्ध्या के स्वरूप एवं मन्त्रों में निहित आध्यात्मिक अर्थों को स्पष्ट करते हुए इन्द्रिय स्पर्श, मार्जन मन्त्र, प्राणायाम मंत्र, अघमर्षण मन्त्र, मनसा परिक्रमा और उपस्थान मन्त्र की विस्तार से व्याख्या की। उन्होंने कहा कि भारतीय परम्परा में सृष्टि के आरम्भ से ही नियमित संध्या वन्दन का विधान है। जो व्यक्ति प्रातः एवं सायं सन्ध्या नहीं करता है वह सच्चे अर्थों में मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं होता। वर्तमान समाज में परस्पर अविश्वास और कष्ट इसलिए बढ रहे हैं क्योंकि समाज से नेत्र बंद करके, ध्यान मुद्रा में ईश्वर आराधना की परम्परा समाप्त हो गई हैं।

डॉ रामचन्द्र ने जोर देकर कहा कि समाज के कोने कोने में संध्यालय बनने चाहिए, जहां सामूहिक संध्या वन्दन की व्यवस्था हो। विज्ञान की कितनी भी उन्नति हो पर सच्चे मानव और श्रेष्ठ नागरिक के निर्माण के लिए संध्या का कोई विकल्प नहीं है। बचपन से ही संध्या का अनिवार्य प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि ईश्वर विश्वासी के आगे पहाड़ जैसा दुःख छोटा लगता है और वह कभी आत्महत्या नहीं करता। मुख्य अतिथि सतीश नागपाल व अध्यक्ष पूजा सलूजा ने भी संध्या के महत्व पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि परमात्मा की कृपा का संध्या के माध्यम से धन्यवाद ज्ञापन करते रहना चाहिए। गायिका प्रवीना ठक्कर, कमला हंस, कौशल्या अरोड़ा, विजय खुल्लर, पिंकी आर्य, ईश्वर देवी, जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, रजनी चुग, संध्या पांडेय, दीप्ति सपरा, कुसुम भंडारी, सुदर्शन चौधरी , रचना वर्मा, कमलेश चांदना आदि के मधुर भजन हुए।

आर्य समाज गुड़ मंडी व दुर्गा पुरी दिल्ली में युवा संस्कार सम्पन्न

आर्य समाज गुड़मंडी में प्रधान वीरेन्द्र आहुजा के संयोजन में व द्वितीय चित्र दुर्गापुरी में रामकुमार सिंह आर्य के नेतृत्व में युवा संस्कार सम्पन्न हुआ, परिषद के महामंत्री आचार्य महेंद्र भाई ने यज्ञ करवाया।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970